अक्टूबर 2017 वर्ष : 1 अंक : 1

सिफरी मासिक समाचार

मात्स्यिकी के गौरवशाली 70 वर्ष

निदेशक की कलम से

संस्थान अपने संस्थापना की 70वी वर्षगाँठ मना रहा है। इस 70 वर्ष के गौरवशाली काल में संस्थान ने अंतर्स्थलीय मत्स्य उत्पादन वृद्धि के लिए अनेक तकनीको को देश के विभिन्न भागो में पहुँचाया है और इसका ही परिणाम है की मत्स्य उत्पादन में अविस्मरणीय वृद्धि हुई है । प्लैटिनम जुबली के अवसर पर संस्थान बहुत से कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है, इसी क्रम में सितंबर महीने में हिंदी में वैज्ञानिक कार्यशाला का आयोजन किया गया, इसमें 61 वैज्ञानिक आलेख प्रस्तुत किये गए। संस्थान में हिंदी सप्ताह का आयोजन 14-21 सितम्बर तक भारतीय विज्ञानं कांग्रेस संस्था के साथ संयुक्त रूप से मिलकर किया, जिसमे सभी सहयोगियों ने भाग लिया। संस्थान अनुसन्धान समिति की मध्यावधि बैठक 18-19 सितम्बर को आयोजित की गई जिसमे संस्थागत अनुसन्धान परियोजनाओं की समीक्षा की गयी। संस्थान प्रबंधन समिति की 46वी बैठक का आयोजन 5 सितम्बर को आयोजित हुई, जिसमे संस्थान के गतिविधियों की समीक्षा की गई। इस महीने संस्थान में बिहार के मछुआरों के लिए तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये जिसमे 87 मत्स्यपालकों को अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षित किया गया। संस्थान के वैज्ञानिको ने अपने शोध कार्य के तहत इस माह कठजोडी नदी से गैस्ट्रोपॉड की एक नयी प्रजाति, पारिओसिय ओकता की पहचान की। अत्यन्त हर्ष के साथ आपके समक्ष संस्थान की हिन्दी पत्रिका का प्रथम अंक प्रस्तुत कर रहा हूँ। इसके साथ ही मै आप सभी को दुर्गा पूजा, दशहरा, गांधी जयन्ती, दीपावली एवं काली पूजा की शुभकामनायें देता हूँ।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- कावेरी नदी के उत्पत्ति स्थान तालाकावेरी से लेकर संगम स्थल बंगाल की खाड़ी के पास कावेरीपत्तनम (तमिलनाडु) तक के 800 कि.मी. भाग में मछलियों के वर्णित निवास स्थान और मत्स्य पालन का सर्वेक्षण किया गया। कावेरी के ऊपरी हिस्से में (भागमंडला से शिवानसमुद्रम) तक का स्थल IUCN की लाल सूची में शामिल मछलियों जैसे *हिपस्लोबारबस मुसुलह*, *एच. डुबियस*, *टोर खुदी*, *डॉकिनिया अरुलियस* और *हायस्पलोबारबस कोल्लस* का निवास माना जाता है। भागमंडला में इन मत्स्य प्रजातियों का योगदान कुल मत्स्य उत्पादन का लगभग 56% योगदान है।

- गैस्ट्रोपॉड की एक नयी प्रजाति पारिओसिय ओकता (ली, 1860) को काठजोडी नदी (स्थान : नारज, गलाधारी, नुआगढ़, 20°28'19.7"N 85°46'46.0"E) से दर्ज किया गया। इस प्रजाति को गंगा नदी और इसकी सहायक नदियों के मध्य तक पहले पाया गया था।

- 15 लाख अँगुलिकाओ का संग्रह करने से देर्जंग जलाशय (पूर्ण जलाशय स्तर : 866 हे.), ओडिशा में भारतीय प्रमुख कार्प (आईएमसी) मछलियों की अनुमानित उत्पादकता लगभग 200 किलो ग्राम / हेक्टेयर / वर्ष पायी गयी।

- जार्गो जलाशय (उत्तर प्रदेश) में वर्ष 2007 में जहाँ वार्षिक मत्स्य उपज लगभग 38.48 टन थी वही यह वर्ष 2015 में बढ़कर 121.446 टन पायी गयी है।

हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी इस संस्थान में दिनांक 14 सितम्बर, 2017 को भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, कोलकाता के साथ संयुक्त रूप से हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम के सम्मानीय अतिथि डा. अशोक कुमार सक्सेना, पूर्व महाध्यक्ष, डा. मनोज कुमार चक्रवर्ती, महाध्यक्ष, डा.(श्रीमती) विजयलक्ष्मी, पूर्व महासचिव, डा.अमित कृष्ण डे, कार्यकारी सचिव, भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, कोलकाता एवं डा. बंकिम चन्द्र झा, पूर्व प्रभागाध्यक्ष, केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान थे। श्री राजीव लाल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया। सभी अतिथियों ने द्वीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

संस्थान के निदेशक डा. बसंत कुमार दास ने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वे अपना ज्यादा से ज्यादा काम हिंदी में जारी रखें। इस उपलक्ष में निदेशक महोदय ने संस्थान में हो रहे अनुसंधान कार्यो का संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत किया।

अंत में डा. अमित कृष्ण डे, कार्यकारी सचिव, भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, कोलकाता तथा डा. श्रीकान्त सामन्ता, प्रधान वैज्ञानिक एवं सर्वकार्यभारी हिंदी कक्ष ने सभी गणमान्य अतिथियों एवं सभागार में उपस्थित सदस्यों को धन्यवाद दिया।

राजभाषा में एक दिवसीय कार्यशाला

निदेशक, डा. बि. के. दास की अध्यक्षता में दिनांक 15 सितम्बर को 'अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी की वर्तमान अवस्था एवं सम्भावनाएं' विषय पर संस्थान में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि डा. गोपाल कृष्ण, निदेशक एवं कुलपति, भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुम्बई उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम के विशेष अतिथि प्रो. रमन त्रिवेदी, पश्चिम बंगाल प्राणी एवं मात्स्यिकी विश्वविद्यालय, कोलकाता, प्रो. सत्य प्रकाश तिवारी, प्रभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवपुर दीनबंधु कालेज, हावड़ा एवं डा. बंकिम चन्द्र झा पूर्व प्रभागाध्यक्ष, केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान थे।

निदेशक डा. बसन्त कुमार दास ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी माध्यम से आयोजित इस वैज्ञानिक कार्यशाला से वैज्ञानिक एवं किसान दोनों निश्चित रूप से लाभान्वित होंगे। इस कार्यशाला के लिए उन्होंने समस्त वैज्ञानिकों और कर्मचारियों को शुभकामनाएं दी।

मुख्य अतिथि ने कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए कहा कि अनुसंधान संस्थानों में हिंदी का प्रयोग सकारात्मक गति से आगे बढ़ रहा है। अतिथि वक्ता ने आदरणीय निदेशक महोदय का धन्यवाद करते हुए अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी की वर्तमान परिस्थिति पर चर्चा की। उन्होंनें कहा कि केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान एवं केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान को मिलकर और कार्य करना चाहिए। इस अवसर पर कार्यशाला की स्मारिका एवं शोध सारांश पुस्तिका का विमोचन अतिथियों के कर कमलों द्वारा किया गया। इस तकनीकी सत्र में डा. बी. सी. झा, पूर्व प्रभागाध्यक्ष को अध्यक्ष एवं डा. वी. आर. सुरेश, प्रभागाध्यक्ष, डा. रमण त्रिवेदी को निर्णायक मंडल में रखा गय।

इस कार्यशाला का मूल उद्देश्य मात्स्यिकी विज्ञान व अनुसंधान में हिन्दी को बढ़ावा देने के साथ-साथ इसके प्रचार-प्रसार को सुदृढ़ करना भी है। यह संस्थान अनुसंधान के साथ -साथ राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में भी लगातार कार्य कर रहा है। इस वर्ष संस्थान अपना 70 वीं वर्षगांठ भी मना रहा है। इसी कड़ी में हिंदी सप्ताह के अवसर पर उक्त कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में विभिन्न अनुसंधानकर्त्ताओं ने अपने शोध कार्यों/विचारों को हिंदी में प्रस्तुत किया। जिसमें अनेक प्रतिभागियों ने भाग लिया। निदेशक महोदय द्वारा उत्कृष्ट शोध कार्य के लिये प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र दिया गया।

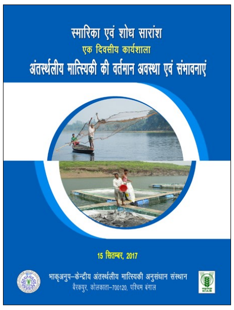

हिन्दी सप्ताह समापन समारोह

दिनांक 26 सितम्बर को हिंदी सप्ताह का समापन समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का आरंभ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के स्वागत गीत से किया गया। अपने स्वागत भाषण में श्री राजीव लाल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने सभी अतिथियों एवं सभागार में उपस्थित कर्मचारियों का स्वागत किया और हिंदी सप्ताह के दौरान कार्यक्रमों के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

समपन समरोह के अवसर पर डा. वी. आर. सुरेश, प्रभागाध्यक्ष ने अपने व्याख्यान में कहा कि हिन्दी सम्पर्क की भाषा है। जो जनमानस को आपस में जोड़ती है। हमें जनता की भाषा में कार्य करना चाहिए। डा. बी. पी. मोहान्ति, प्रभागाध्यक्ष ने अपने उदबोधन में कहा कि हिंदी लोगों के प्यार से पल्लवित पुष्पित होती है। डा. यू. के. सरकार, प्रभागाध्यक्ष ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी खेत खलिहानों की भाषा है। वैज्ञानिक तकनीकी ज्ञान को सरल हिंदी के माध्यम से कृषकों तक पहुचाने की आवश्यकता है। डा. बंकिम चन्द्र झा, पूर्व प्रभागाध्यक्ष, कहा कि हिंदी के द्वारा हर प्रदेश के लोगों में सामंजस्य बनाने कि आवश्यकता है। आगे उन्होंने कहा कि हमें हिंदी के प्रति सकारात्मक मानसिकता बनाने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर क्विज प्रतियोगिता में भाग लेने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों, शोध छात्र-छात्राएं एवं हिंदी में अधिक कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को भी पुरस्कृत किया गया। संस्थान के निदेशक डा. बसंत कुमार दास ने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अनुरोध किया की वे हर महीने चार पृष्ठों का एक न्यूज लेटर हिंदी में प्रकाशित करें। इस न्यूज लेटर को संस्थान की वेबसाइट पर भी अपलोड किया जाए।

अंत में डा. श्रीकान्त सामन्ता, प्रधान वैज्ञानिक एवं सर्वकार्यभारी हिंदी कक्ष ने सभी गणमान्य अतिथियों एवं सभागार में उपस्थित सदस्यों को धन्यवाद दिया।

इस अवसर पर संस्थान के केन्द्रों में भी अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया।

संस्थान अनुसंधान समिति की मध्यावधि बैठक

संस्थान की अनुसंधान समिति की मध्यावधि बैठक दिनांक 18 एवं 19 सितम्बर को अयोजित की गई। डा. अरुण पन्डित सचिव, आई०आर०सी० ने सभी वैज्ञानिकों का स्वागत भाषण से स्वागत किया। डा. बसन्त कुमार दास, निदेशक एवं अध्यक्ष आई०आर०सी० ने सभी वैज्ञानिकों को उच्च कोटि के अनुसंधान करने का आह्वान किया। बैठक में वैज्ञानिकों ने गत छः मास के दौरान किये गये कार्यो का विवरण दिया। इस दौरान संस्थान की पंद्रह अनुसंधान परियोजनाओ पर एवं तीन आउटरीच परियोजनाओ पर चर्चा की गयी। निदेशक महोदय ने परियोजनों की प्रगति पर सन्तोष व्यक्त करते हुये कहा कि वह अपने वैज्ञानिकों से अगले 6 मास में और भी उत्तम शोध करने की उम्मीद रखते है।

संस्थान प्रबंधन समिति की बैठक

46 वीं संस्थान प्रबंधन समिति की बैठक 5 सितंबर को अयोजित की गई।

महत्वपूर्ण बैठके

- 4 सितंबर को संस्थान के निदेशक एवं वैज्ञानिकों ने, स्कोप कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली में "अस्सेसमेन्ट ऑफ् इनलैंड फिश प्रोडक्शन" और "स्ट्रेनथनिंग ऑफ डेटाबेस एंड जियोग्राफिकल इनफॉर्मेशन सिस्टम फार फिशरीज सेक्टर" पर सचिव, पशुपालन विभाग, डेयरींग और मत्स्य पालन विभाग के साथ समीक्षा बैठक में भाग लिया।
- 6 सितंबर को संस्थान के वैज्ञानिकों ने रायपुर में छत्तीसगढ़ के मत्स्य पालन निदेशक के साथ मिलकर जलाशयों में पिंजरा पालन के संबंध में एक बैठक की।
- 8 सितंबर को, संस्थान के वैज्ञानिकों ने झारखंड मत्स्य पालन के उप निदेशक, और संयुक्त निदेशक मत्स्य पालन निदेशालय के साथ मिलकर "झारखंड के जलाशयों में पिंजरे पालन" पर एक बैठक की।
- 16 सितंबर, को संस्थान के निदेशक ने एनएफडीबी के साथ परियोजनाओ को अंतिम रूप देने के लिये एनएफडीबी, हैदराबाद में एक बैठक की।
- 12 सितंबर को संस्थान द्वारा जलाशयों में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रस्तुत रिपोर्ट को अंतिम रूप देने के लिए मध्य प्रदेश मत्स्य पालन महासंघ, भोपाल, मध्य प्रदेश सरकार के साथ संस्थान के वैज्ञानिकों के बीच एक बैठक भोपाल, मध्य प्रदेश में आयोजित की गई।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

15 सितंबर, को सुश्री इजर मिड्टकंडल, विज्ञान और प्रौद्योगिकी काउंसलर, रॉयल नॉर्वेजियन दूतावास, अपने सहयोगी श्री अशोक अग्रवाल के साथ संस्थान का दौरा किया और अनुसंधान परियोजना सहयोग के अवसरों के बारे में चर्चा की।

स्वच्छता ही सेवा

संस्थान ने दिनांक 15 सितंबर से 2 अक्टूबर के दौरान स्वच्छता पाखवाड़ा मनाया। संस्थान के कर्मचारियों को निदेशक डा. बसन्त कुमार दास, ने 15 सितंबर को स्वच्छता के लिए शपथ दिलवाई। इस दौरान संस्थान में कई कार्यकलाप प्रारम्भ किये गये। इस अवधि के दौरान कर्मचारियों ने बड़े पैमाने पर गेराज कोर्ट यार्ड, साइकिल स्टैंड, संस्थान परिसर, दो पैसा फेरी घाट, मनिरामपुर सार्वजनिक शौचालय और मंगल पांडे सार्वजनिक पार्क की सफाई की। इसी तरह की गतिविधियां क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र और क्षेत्रीय केंद्र पर भी हुई। इस तरह की गतिविधियों से आसपास के जनमानस पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। दिनांक 24 सितंबर को समग्र स्वछता दिवस के अन्तर्गत डा० विमल प्रसन्ना मोहंती, विभागाध्यक्ष मत्स्य संसाधन और पर्यावरण प्रबंधन के नेतृत्व में संस्थान के कर्मचारियों ने मनिरामपुर डाकघर के पास स्थित सार्वजनिक शौचालय की सफाई की एवं आसपास के जगहों पर ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव किया, जिससे कि बीमरियाँ न फ़ैले। सर्वत्र स्वच्छता के अन्तर्गत

मनिरामपुर फेरी घाट की सफाई की गयी। गाँधी जयंती के अवसर पर संस्थान के मुख्य भवन की सफाई कर स्वच्छता पाखवाड़ा काकेए समापन किया गया। संस्थान के केन्द्रों पर भी समग्र स्वच्छता दिवस के अन्तर्गत बहुत से कार्यक्रम किये गये।

फिश फीड मिल की स्थापना के लिये समझौता ज्ञापन

18 सितंबर को संस्थान ने मैसर्स गीतांजली के साथ कलियन तला, पीओ बाजीपुर, पीएस: करीमपुर, जिला नाडिया, पश्चिम बंगाल में मछली फ़ीड मिल की स्थापना पर परामर्श देने के लिए एक समझौता क़िया। संस्थान की ओर से निदेशक डॉ. बी के दास और मैसर्स गीतांजलि के श्री गियरन वैराग्य ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

1-12 सितंबर से आई.सी.ए.आर - सी. आई. एफ. ई., मछली न्युट्रिशन, बायोकैमिस्ट्री और फिजियोलॉजी डिवीजन के 11 एम.एफ.एससी. छात्रों के लिए *"मछली बायोकैमिस्ट्री में समकालीन तकनीकों"* पर व्यावहारिक व क्रियाशील प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

7-13 सितंबर तक बिहार के खगडिया जिले के तीस (30) मछुआरों के लिए "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 7 दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर मछुआरों को प्रशिक्षित किया गया।

14-20 सितंबर, तक बिहार के शिवहर जिले के 30 मछुआरों के लिए "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन और विकास" पर 7 दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर मछुआरों को प्रशिक्षित किया गया।

18-24 सितंबर, तक बिहार के बेगुसराय जिले के 25 मछुआरों के लिए *"अंतर्स्थलीय खुला पानी मत्स्य पालन प्रबंधन"* पर 7 दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

सेवानिवृत्ति

इस माह संस्थान से डा. मानस कुमार बंधोपाध्याय, प्रधान वैज्ञानिक, मत्स्य संसाधन और पर्यावरण प्रबंधन विभाग एवं श्री सर्वानन्द कर्मकार, सहायक भंडार विभाग से सेवानिवृत्त हुए।

स्थानांतरण

नदीय पारिस्थितिकी और मत्स्य विभाग, के डा० मानस एच .एम. का स्थानांतरण भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय समुद्री मत्स्य अनुसंधान संस्थान कोचीन में हुआ।

सम्पादक मंडल की तरफ से

सिफरी मासिक समचार के प्रथम अंक में आप सभी पाठकों का स्वागत है। यह भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, की तरफ से हिन्दी में समाचार का प्रथम प्रयास है। आशा करते है कि यह सिफरी मासिक समचार आपको पसंद आयगा। हम भविष्य में सुधार के लिए आपकी महत्वपूर्ण टिप्पणी का स्वागत करते हैं | अन्त में आप सभी को दुर्गा पूजा, दशहरा, गांधी जयन्ती, दीपावली एवं काली पूजा की हार्दिक शुभकामनायें।

प्रकाशक मंडल

डा. बसन्त कुमार दास, निदेशक द्वारा प्रकाशित, श्री संजीव कुमर साहू, श्री प्रवीन मौर्य, श्री गणेश चंद्र द्वारा संकलित और संपादित, मो. कसिम एवं सुश्री सुनीता प्रसाद द्वारा संकलन और संपादन सहायता। श्री सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक द्वारा फोटोग्राफी।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2008 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत

दूरभाष: 91-33-25921190/91 फैक्स: 913325920388 ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; www.cifri.res.in